ISSN (Online) 2320-771X
ISSN (Print) 2347-5404

Special issue of E-Seminar
on
Ethical Consideration in Research
Date: 16th May, 2020

International Journal of Research in Humanities and Social Sciences (IJRHS)

Vol.8, Special Issue 2, June: 2020

शोध नैतिकता का आधार : भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति

डॉ. वंदना डे
असोसिएट प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ

ज्योति गुप्ता
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश
शोध नैतिकता का आशय अनुसंधान संस्थानों द्वारा बताए गए उन नियमों, सिद्धान्तों एवं आचरण के समूह से है जो कि शोध कार्य की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। शोध नैतिकता सहयोगात्मक कार्यों के लिए आवश्यक मूल्यों का समर्थन करते हैं तथा शोधकर्ता और समाज के मध्य सहयोग को बढ़ाने में सहायक है। शोध नैतिकता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शोधकर्ता और समाज के हितों से है। आज सम्पूर्ण विश्व शोध नैतिकता की बात कर रहा है परन्तु विभिन्न अनुसंधान संस्थानों द्वारा बताए गए नैतिक आचरणों का मूल क्या है? शोध नैतिकता का आधार क्या है? शोध के नैतिक सिद्धान्त कैसे सुनिश्चित किए गए हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति में परिलक्षित है। प्रस्तुत शोध में शोध नैतिकता के लिए दिशा–निर्देशों का आधार भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति में होने के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है। यह एक अनुभवजन्य अनुसंधान है।

मुख्य शब्द : शोध नैतिकता, सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति

प्रस्तावना

जीवन–मूल्य, मानवीय आचरण एवं व्यवहारों का मापदण्ड है। इनका आधार मानवीय अनुभव, सामाजिक परम्पराएँ और विभिन्न संस्कृतियाँ होती हैं। जीवन–मूल्य में नियमन एवं विकास के अनेक धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का योगदान होता है। आधुनिक युग में मुल्यों की अवधारणा में परिवर्तन आया है। आधुनिक मूल्यों पर आधुनिकता, भौतिकता, अन्धानुकरण, अनीश्वरवादी पवृत्ति, तर्क–प्रधान चिंतन एवं वैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रभाव पड़ा है। आज के बदलते परिवेश में मूल्यों का निरंतर ह्रास होता जा रहा है जिसका प्रभाव मानव समाज पर प्रत्यक्ष रूप से पड रहा है। डॉ0 मुखर्जी का मत है कि "कोई समाज यदि अपने अस्तिव को बनाए रखना चाहता है तो उसे व्यक्तित्व के सर्वोच्च मूल्यों की नियमित रूप से पूर्ति करनी चाहिए। मानव समाज व मानव–कल्याण के लिए मूल्यों का पालन एवं संरक्षण आवश्यक है।" समाज की प्रगति की राह में शोध का विशेष महत्व है। शोध का क्षेत्र भी नैतिक मूल्यों में निरंतर गिरावट से प्रभावित हुआ है। शोध निष्कर्षों एवं परिणामों का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर पड़ता है इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि शोध में नैतिकता का पालन किया जाए। शोध के लिए निर्देशित नियम को ही शोध–नैतिकता कहा जाता है। शोध–नैतिकता के सन्दर्भ में American Psychological Association,

ISSN:(P) 2347-5404

The Economical and Social Research Council (UK), Association of Social Anthropologist (UK), Austrian Code For the Responsible Conduct of Research, ESRC Framwork of research Ethics, WHO Research Ethics Review Committee, आदि संस्थानो द्वारा शोध नैतिकता से सम्बन्धित दिशा निर्देश बताए गए है। शोध नैतिकता से सम्बन्धित बताए गए दिशा निर्देश का आधार कही न कही भारतीय धर्म एव सस्कृति से परिलक्षित हुए है। भारतीय दर्शन, धर्म, सस्कृति, रीति–रिवाज, साहित्य, परम्पराएँ सभी नैतिकता के पक्षधर है तथा नैतिकपूर्ण आचरण के लिए प्रेरित करते है। नैतिकता भारतीय जीवन का आधार है, जो मानव तथा समाज दोनो के लिए ही नैतिक मार्गदर्शन करती है।

शोध एक बोधपूर्ण प्रयत्न है, जिसका उद्देश्य नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है। मानव समाज के लिए शोध का बहुत महत्त्व है क्योकि शोध ही प्रगति एव विकास का आधार है। डा0 एम0 वर्मा ने शोध को बौद्धिक क्रिया के रूप में स्पष्ट करते हुए कहा है कि शोध एक ऐसी बौद्धिक क्रिया है जो नवीन ज्ञान को उजागर करती है, अथवा पूर्व की त्रुटियों व भ्रान्तियों को परिमार्जित करती है, एवं ज्ञान के विद्यमान कोष में व्यवस्थित ढग से वृद्धि करती है।" तथा पी0 एम0 कुक ने शोध को सामाजिक क्रिया के रूप मे परिभाषित करते हुए कहते है–"किसी समास्या के सन्दर्भ में ईमानदारी, व्यापकता, समझदारी से तथ्यों की खोज करना तथा उनके अर्थ या निहितार्थ को प्रस्तुत करना अनुसंधान है। किसी दिए गए शोध कार्य के परिणामों व निष्कर्षों को उस अध्ययन के क्षेत्र में ज्ञान में वृद्धि करने वाले प्रमाणिक, पुष्टि योग्य योगदान करने वाले होने चाहिए।" इन परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि शोध द्वारा ही समाज की प्रगति एव विकास की प्रक्रिया सम्भव है। शोध ही वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विविध विषयों में गहन एवं सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त होता है, ज्ञान का भण्डार परिमार्जित होता है, नवीन विधियों एव उत्पादो का विकास होता है। शोध विकास का आधार है इसलिए शोध में नैतिकता एक आवश्यक पहलु है। किसी भी शोध की समस्या कितनी ही मौलिक, औचित्यपूर्ण, गम्भीर एवं सामाजिक महत्व की हो शोध विधि कितनी ही वैज्ञानिक, सुनियोजित हो, प्रतिदर्श का चयन किसी भी तकनीकि से किया गया हो, प्रतिदर्श का आकार कितना बडा हो, कितना ही अच्छा शोध उपकरण हो परन्तु यदि शोध में नैतिकता का अभाव है तो प्राप्त शोध निष्कर्ष किसी भी प्रकार से उपयोगी नही हो सकते है। नैतिकता का सम्बन्ध शोध के प्रत्येक चरण से है अर्थात् नैतिकता का सम्बन्ध शोध समस्या के चयन, परिकल्पना का निर्माण, प्रतिदर्श चयन शोध–विधि, शोध उपकरण के चयन से लेकर प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या, शोध प्रकाशन सभी पहलुओ से है। शोध की सार्थकता, विश्वसनीयता एव वैधता शोधार्थी की सामाजिक व नैतिक मूल्यों पर निर्भर है।

नैतिकता, दर्शन की एक शाखा नीतिशास्त्र का विषय है जो समाज में सही व गलत की अवधारणा को बताती है। नैतिकता शब्द अग्रजी के Ethics का हिन्दी रूपान्तरण है। Ethic शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Ethos से हुई है जिसका अर्थ है लोकाचार से है अर्थात् नैतिकता मानव मूल्यों का वह तत्व है जो यह विचार करता है कि सामाजिक परिपेक्ष्य में क्या करने योग्य है, क्या नही करने योग्य है। नैतिकता मानव के अन्तर्मन के सद्गुणो का प्रतिबिम्ब है जो मानव के सामाजिक आचरण से झलकता होता है। व्यक्ति

कौन से आचरण उचित, अर्थात करने योग्य है तथा कौन से आचरण अनुचित अर्थात न करने योग्य है, यही नैतिकता है। वैसे नैतिकता को समाज मे मान्यता प्राप्त होती है। नैतिकता के अर्थ को परिभाषित करते हुए मैकाइवर एवं पेज कहते है कि "नैतिकता का तात्पर्य नियमो की उस व्यवस्था से है जिसके द्वारा व्यक्ति का अन्तःकरण अच्छे व बुरे का बोध प्राप्त करता है।" किरले डेविड ने भी नैतिकता को परिभाषित करते हुए कहते है कि "नैतिकता कर्तव्य की भावना अर्थात उचित व अनुचित पर बल देता है।" जिसबर्ट के अनुसार," नैतिकता नियमो की वह व्यवस्था है जो अच्छे और बुरे से सम्बन्धित है तथा जिसका अनुभव अंतरात्मा द्वारा होता है।" नैतिकता एक सभ्य समाज का लक्षण है जो समाज के सभी घटको को समाजस्य के धागे मे बांधे रखता है। नैतिकता कोई व्यक्तिगत संकल्पना नही है अपितु यह तो एक सामाजिक संकल्पना है अर्थात नैतिकता का आचरण तो मानवो द्वारा किया जाता है परन्तु इसका प्रभाव सम्पूर्ण मानव समाज पर पड़ता है।

नैतिकता शब्द कर्तव्य की आन्तरिक भावना पर बल देता है अर्थात इसका सम्बन्ध सद् और असद्, उचित और अनुचित से है। आचार सम्बन्धी नियमो का पालन चरित्र की दृढ़ता और पवित्रता से जुड़ी है। नैतिकता का पालन व्यक्ति इसलिए नही करता है कि उसके पूर्वज भी ऐसा करते थे या उसके आस-पास के लोग ऐसा कर रहे है वरन् इसलिए करते है क्योंकि इसके पीछे न्याय, पवित्रता और सच्चाई के भाव होते है। नैतिकता का सम्बन्ध व्यक्ति के स्वयं के अच्छे व बुरा महसूस करने पर निर्भर करता है। नैतिकता प्रथा की अपेक्षा आत्मचेतना से अधिक प्रेरित है।

भारत एक विविधता का देश है। भारत भूमि पर कई धर्मो, संस्कृतियो का उदय हुआ है परन्तु सभी का कार्य व उद्देश्य मानव मे उच्च आचरण का विकास कर जीवन को सही मार्ग-दर्शन प्रदान करना है। भारत के लोग धर्म मे बहुत विश्वास करते है और वे मानते है कि धर्म उनके जीवन को आधार देते है, अर्थ व उद्देश्य देते है। भारत मे धर्म केवल मान्यता तक ही सीमित नही है अपितु यह तो जीवन दर्शन है अर्थात भारत मे धर्म रीति-रिवाजो, मान्यताओ, परम्पराओ एवं विचारो का अटूट अंग है जो मानव मे नैतिकता सदाचार, कर्तत्वपरायणता, सत्ययता जैसे सद्गुणो का विकास करता है। शोध नैतिकता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध न्याय-दर्शन मे दृष्टिगोचर है। न्याय-दर्शन 'प्रमाणैरर्थपरीक्षणं' सूत्र पर आधारित है जिसका अर्थ है प्रमाणो द्वारा ही अर्थ या सिद्धान्त का परीक्षण ही न्याय है अर्थात बिना प्रत्यक्ष प्रमाण कुछ भी विश्वसनीय या प्रमाणिक नही होता है। शोध के सन्दर्भ मे न्याय-दर्शन उपयुक्त दिशा-निर्देश देता है कि एक शोधकर्ता को समुचित साक्ष्यो के अभाव मे किसी भी तथ्य या घटना को स्वीकार नही करना चाहिए। शोधकर्ता को समुचित साक्ष्यो के प्रति सत्ययता, ईमानदारी का मूल न्याय-दर्शन मे मिलता है।

वैदिक काल से ही वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ मानव जीवन का आधार रहे है और प्राकृतिक नियमो, मूल्यो का प्रसार कर रहे है। वेद मे ऋत के नियम को नैतिक माना गया है। वेदो का सार विश्वहित, मानव-कल्याण मे समाहित है। सनातन आर्य संस्कृति के दो प्रमुख महाग्रन्थ रामायण और महाभारत नैतिकता के प्रतीक है। इनका प्रमुख विषय सत्य एवं राजानीति है। इन महाग्रन्थो का मुख्य विषय धर्म व अधर्म तथा नीति व अनीति है।इनमें निहित नैतिक मूल्यो को पात्रो की सहायता से बताया गया है। वर्तमान मे भी ये ग्रन्थ मानव मे नैतिक गुणो का विकास कर रहा है। शोध के सन्दर्भ मे ये ग्रन्थ शोध के

उद्देश्य सम्बन्धि दिशा–निर्देश देता है कि एक शोधकर्ता को सृजनात्मक विषयों को प्रश्रय कर मानव–समाज के लिए हित कर विषयों पर अध्ययन करे तथा विध्वंसकात्मक विषय का आत्मसात नही करना चाहिए।

जैन व बौद्ध धर्म में नैतिकता और उसके पालन पर बल दिया जाता है। सामान्य तौर पर जैन व बौद्ध धर्म नैतिकता के लिए पंच–महाव्रत व पंचशील सिद्धान्त का पालन करना आवश्यक मानते है। जैन धर्म के पंच–महाव्रत सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह है तथा बौद्ध धर्म के पंचशील सिद्धान्त हिंसा न करना, व्यभिचारी न करना, चोरी न करना, असत्य न कहना व नशा न करना है। । जैन व बौद्ध धर्म मानव को नैतिक जीवन के लिए प्रेरित करते है। ये पंच–महाव्रत व पंचशील सिद्धान्त शोध–नैतिकता को भी आधार प्रदान करते है। जैन व बौद्ध धर्म में अहिंसा अर्थात् किसी को भी कष्ट न पहुंचाना को विशेष महत्त्व दिया है। अहिंसा का आशय शारीरिक, मानसिक व भावात्मक अहिंसा से है। जैन धर्म में सभी के जीवन को समान माना गया है, तथा मानव ही नही अपितु किसी भी जीव के साथ हिंसा अधर्म माना गया है। शोध के सन्दर्भ में प्रतिभागियो के प्रति नैतिकता को आधार जैन व बौद्ध धर्म के अहिंसा से मिलता है। शोध में प्रत्येक प्रतिभागी की स्वीकारता, प्रतिभागियों की सुरक्षा, प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त सूचनाओ की गोपनियता, प्रतिभागिता छोड़ने सम्बन्धित अधिकार आदि जैन व बौद्ध धर्म के अहिंसा से परिलक्षित होता है। जैन व बौद्ध धर्म में स्तेय अर्थात् चोरी करना की तुलना अधर्म एव अनैतिक बताया गया है। चोरी का आशय धन चोरी करना, दूसरो को चोरी करने के लिए निर्देश देना या चोरी की संपति प्राप्त करने से है। नैतिकता के भाव में चोरी न करना भी सम्मिलित है। सभी धर्मो का शाश्वत् मूल्य है चोरी न करना। शोध के सन्दर्भ में भी चोरी अनैतिकतापूर्ण कार्य है परन्तु शोध में चोरी से आशय किसी अन्य के शब्दो, विचारो या साहित्य का बिना उन्हे श्रेय दिए उपयोग करने से है।

भारतीय संस्कृति में उदारता का भाव समाहित है। भारतीय संस्कृति में स्वार्थ की भावना के स्थान पर परोपकार की भावना परिलक्षित है। महोपनिषद में वर्णित श्लोक जिसमे सम्पूर्ण धरा को अपना कुटुम्ब स्वीकार किया गया है, इस प्रकार है–

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात् यह अपना बन्धु है और यह अपना बन्धु नही है, इस प्रकार की गणना छोटे चित्त वाले व्यक्ति करते है उदार हृदय वाले लोग तो सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार मानते है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में उदारता, परोपकारिता एवं व्यापकता का भाव निहित है जो नैतिकता के विकास में सहायक है। शोध का उद्देश्य भी निज स्वार्थ न होकर परार्थ भाव होना चाहिए। शोध के परिणामों एवं निष्कर्षों को अपने उपयोग तक सीमित नही रखकर मानव एवं समाज के विकास के लिए करना चाहिए। डेबरथ स्मिथ ने फोइव प्रिंसिपल फॉर रिसर्च में अपनी बौद्धिक सम्पत्ति की खुलकर विमर्श की बात कही है। अर्थात् शोधकर्ता अपने शोध परिणामो का उपयोग को मानव कल्याण के लिए करे, यह भी शोध नैतिकता का विषय है।

उपसंहार

सामाजिक तथा व्यावहारिक विज्ञानो मे अधिकाँश शोधो मे सहयोगियो, प्रतिभागियो एव प्रयोज्यों के रूप में अनेक व्यक्ति सम्मिलित होते है तथा शोध निष्कर्षो एव परिणामों का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर पड़ता है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि शोध मे नैतिक पक्षो का पालन किया जाए। शोध नैतिकता का सम्बन्ध शोध मे समस्या चयन, शोध उद्देश्यो, शोध विधि, न्यादर्श चयन, उपकरण का चुनाव, आकाड़ो को एकत्र करने, आकाड़ो का विश्लेषण एव परिणामों की व्याख्या तक ही सीमित नही है अपितु प्राप्त परिणामो का प्रकाशन एवं परिणामो के उपयोग से भी सम्बन्धित है। यदि शोध में नैतिकता का अभाव है तो शोध मानव एव समाज के लिए विनाशक सिद्ध हो सकता है। नैतिकता का सम्बन्ध व्यक्ति के किसी एक पक्ष या आयाम से नही होता है वरन् नैतिकता तो सम्पूर्ण जीवन से जुड़ी होती है। ऐसा नही होता कि एक व्यक्ति एक समय नैतिक तथा अन्य किसी समय अनैतिक हो। व्यक्ति जीवन-पर्यन्त किसी भी कार्य को करने से पूर्व उचित-अनुचित का विचार करता है। व्यक्ति मे नैतिकता का विकास में उसके आस-पड़ोस, माता-पिता, परिवार, मित्रो, शिक्षक के आचरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। नैतिकता का विकास में विभिन्न दार्शनिक विचारों, धार्मिक कियाओं, धार्मिक साहित्य, संस्कृति एव रीति-रिवाजो का भी प्रभाव पड़ता है। अतः समाज तथा मानव की प्रगति एवं विकास के लिए आवश्यक है कि बाल्यावस्था से ही बालक में नैतिक गुणों का विकास किया जाए।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. गुप्ता, एस.पी. (2015). अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन.
2. सिंह, ए. के. (2010). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा षिक्षा में षोध विधियाँ. दिल्ली: मोती लाल बनारसी दास प्रकाशन.
3. बेस्ट, जे. डब्लू. (2014). रिसर्च इन एजुकेषन (10 एडिषन). दिल्ली: पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लि.
4. बाजपेयी एस. आर. (2007). सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण, कानपुर : किताबघर
5. पाण्डेय आर (2010). षिक्षा के दार्षनिक सिद्धान्त, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेषन्स
6. चट्टोपाध्याय एस0 (2014). भारतीय दर्षन, पटना : पुस्तक भण्डार.
7. https://www.apa.org/monitor/jan03/principles
8. https://www.drishtiias.com/hindi/point-to-point/paper4/ethics-in-buddhism-and-jainism
9. http://dissertation.laerd.com/principles-of-research-ethics.php
10. http://wikipedia.org
11. www.educationjournal.org
12. http://www.aryamantavya.in>
13. http://www.shodhganga.inflibitet.ac
14. http://libguides.library.city.edu.hk
15. http://www.nih.gov/health-information/nih-clinical-research-trials-you/guiging-principles-ethical-research